Dr. Girija Varun
Associat professor
Deptt of psychology
Rohtas mahila college, Sasaram
B.A. Part. II paper III Group A

(ख) सांस्कृतिक चिन्ह :- इसके अन्तर्गत लोक-ज्ञान के सम्पूर्ण अंग, यथा लोक विश्वास मान्यताएँ एवं निषेद, लोक-साहित्य अर्थात् लोकगीत, लोक कथाएँ तथा मौखिक वर्णन, यथा- कहावतें तथा उपचार मंत्र आदि आते हैं। लोक-ज्ञान के इन अंगों के आधार पर प्रचलित सामान्य अभिव्यक्तियों की सत्यता का वैज्ञानिक परीक्षण होता है तथा इन्हें हम प्राक्कल्पना के रूप में मान सकतें हैं।

(ग) सामाजिक सांस्कृतिक परिवर्तन :- काल में परिवर्तन के साथ ही संस्कृति में भी परिवर्तन होता है। उसके विभिन्न अंगो मे परिवर्तन आ जाता है। बाह्य संस्कृतियों के प्रभाव के कारण परम्पराओं एवं प्रथाओं, लोकरीतियों एवं सांस्कृतिक मूल्यों मे परिवर्तन होता है। अंग्रेजी शासन-व्यवस्था, पाश्चात्य दर्शन, आधुनिक शिक्षा, औद्योगीकरण एवं वैज्ञानिक आविष्कारों ने भारतीय समाज को परिवर्तित कर दिया। प्राक्कल्पना के उद्गम स्रोत जैसे जाति व्यवस्था, संयुक्त परिवार विचार-पद्धति, वेश-भूषा, व्यवसाय, पारस्परिक व्यवहार इत्यादि में हुए परिवर्तन भी हो सकते हैं।

(2) वैज्ञानिक पद्धति :- विज्ञान ही अनेक प्राक्कल्पनाओं का उद्गम है। प्रायः प्रत्येक विज्ञान में विभिन्न विषयों से संबंधित सामान्यीकरण होतं होते हैं। सामान्यीकरणों

से जिन पक्षों के संबंध में ज्ञान प्राप्त होता है उसे भी हम प्राक्कल्पनाओं का उद्गम मानते हैं। जब उन सिद्धान्तों का पुनर्परीक्षण होता है तो उनके अन्तर्गत न्यूनताएँ या अशुद्धियाँ विद्यमान रहती हैं, वे भी सामने आ जाती हैं। प्रचलित सिद्धान्तों से सामाजिक अध्ययनों को एक निश्चित दिशा मिलती है, साथ ही नवीन प्राक्कल्पनाओं का अभ्युदय होता है। लाम्ब्रोसो का अपराध क्षेत्र में, दुर्खीम का आत्महत्या के विषय में, रूसो का सामाजिक अनुबंध के संबंध में, प्लेटो का राज्य के संबंध में, गाँधी का क्षमावादी दण्ड-विधान के संबंध में, रिजले और नेस्फील्ड का जाति-प्रणाली के संबंध में जो सिद्धान्त हैं उनके पुनर्परीक्षण के अन्तर्गत प्राक्कल्पना के निर्माण के लिए पर्याप्त-क्षेत्र की उपलब्धि होती है।

3) समरूपताएँ - यदा-कदा समरूपता के आधार पर भी प्राक्कल्पनाएँ निर्मित होती हैं। जूलियन हक्सले के विचारानुसार, वैज्ञानिक प्रकृति के संबंध में सामयिक अवलोकन भी प्राक्कल्पनाओं के आधार पर दृष्टिगोचर होते हैं। ये समानताएँ कभी तो विभिन्न व्यवहार क्षेत्रों की ओर संकेत करती हैं और कभी विभिन्न स्थानों पर घटित होने वाली घटनाओं की समरूपता की प्रकृति बताती हैं। कुछ ऐसे भी व्यवहार हैं जो मनुष्यों एवं पशुओं में समान होते हैं। परिस्थिति विज्ञान के अन्तर्गत हम सामान्य मानवी रूप अथवा क्रियाओं को समान क्षेत्रों एवं परिस्थितियों में विद्यमान व्यक्तियों में देखते हैं। पेड़-पौधों में भी नर-मादा

संबंध एवं व्यवहार हम देखते हैं। वह पुरुषों एवं स्त्रियों के यौन-संबंध का संकेत देता है। डुई पाश्चर ने चेचक के टीके लगाने के अपने सिद्धांत में कहा है कि गायों के चेचक-रोग से चेचक का संक्रमण हो जाता है। इसी के आधार पर मानव शरीर में चेचक के कीटाणु घुसने की प्राक्कल्पना को माना गया है।

Scanned with CamScanner